## पद १८२

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

अजुनि कां न ये रे यादवराया।।ध्रु.।। दुःशासन करीं केस धरुनिया। ओढीतसे लवलाह्या।।१।। दुर्योधन नग्न करूं इच्छितो। दिसे पांच निर्बळी काया रे।।२।। भीष्मादिक गुरु द्रोण बैसले। त्यासी नयेचि दया रे।।३।। धांव धांव माझे सांवळे कन्हाई। दास माणिक लागत पाया रे।।४।।